हज व उमरा गाइड

क़दम-ब-क़दम सुन्नत तरीक़ा · हर दुआ दलील के साथ · हज दिन-ब-दिन

لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ

मुफ़्त — दूसरों तक पहुँचाएँ · QURANPLUSSCHOOL.COM

फ़हरिस्त

1. 🕋 हज और उमरा — इनकी अहमियत
2. 🧳 सफ़र से पहले
3. ⚪ पहला क़दम — मीक़ात पर एहराम
4. 🕌 दूसरा क़दम — मस्जिद-ए-हराम में दाख़िला
5. 🔄 तीसरा क़दम — तवाफ़: सात चक्कर
6. 🤲 चौथा क़दम — मक़ाम-ए-इब्राहीम पर दो रकअत, फिर ज़मज़म
7. ⛰️ पाँचवाँ क़दम — सफ़ा और मरवा के दरमियान सई
8. ✂️ छठा क़दम — बाल मुंडवाना या कटवाना
9. 📋 उमरा एक नज़र में
10. 📅 हज दिन-ब-दिन (8 से 13 ज़िलहिज्जा)
11. 🌅 9 ज़िलहिज्जा — अरफ़ात और मुज़दलिफ़ा की रात
12. 🐑 10 ज़िलहिज्जा — क़ुर्बानी का दिन
13. 🪨 11 से 13 मिना में, और तवाफ़-ए-विदा
14. 👧 बच्चे हज और उमरे में
15. 🌴 मदीना मुनव्वरा की ज़ियारत
16. 📿 सफ़र की मज़ीद दुआएँ
17. 💡 अमली मशवरे और आम ग़लतियाँ

हर वह चीज़ जो हाजी को चाहिए, उसी तरतीब से जिसमें आप अमल करेंगे: उमरे के लिए एहराम, तवाफ़, सई और हल्क़, फिर मिना से अरफ़ात और वापसी तक हज के दिन। हर क़दम नबी ﷺ की सुन्नत के मुताबिक़ है, और हर दुआ अरबी, तर्जुमे, किताब के हवाले और दर्जे के साथ दी गई है। लोगों में आम पढ़ी जाने वाली इज़ाफ़ी दुआएँ उनके माख़ज़ के साथ अलग दी गई हैं।

🕋 हज और उमरा — इनकी अहमियत

إِنَّ أَوَّلَ بَيْتٍ وُضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِي بِبَكَّةَ مُبَارَكًا وَهُدًى لِّلْعَٰلَمِينَ ﴿٩٦﴾

बेशक सबसे पहला घर जो लोगों के लिए बनाया गया वही है जो मक्का में है, बरकत वाला और सारे जहानों के लिए हिदायत।

सूरह आल-ए-इमरान (3:96)

... وَلِلَّهِ عَلَى ٱلنَّاسِ حِجُّ ٱلْبَيْتِ مَنِ ٱسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلًا ... ﴿٩٧﴾

और अल्लाह के लिए लोगों पर इस घर का हज फ़र्ज़ है, जो वहाँ तक पहुँचने की ताक़त रखे।

सूरह आल-ए-इमरान (3:97)

وَأَتِمُّوا۟ ٱلْحَجَّ وَٱلْعُمْرَةَ لِلَّهِ ... ﴿١٩٦﴾

और हज और उमरा अल्लाह के लिए पूरा करो।

सूरह अल-बक़रा (2:196)

"जिसने अल्लाह के लिए हज किया और न बेहयाई की बात की और न गुनाह किया, वह (गुनाहों से पाक होकर) ऐसे लौटता है जैसे उस दिन था जब उसकी माँ ने उसे जना।"

सहीह बुख़ारी 1521 · सहीह मुस्लिम 1350 · सहीह

"एक उमरा दूसरे उमरे तक के गुनाहों का कफ़्फ़ारा है, और मक़बूल हज (हज्ज-ए-मबरूर) का बदला जन्नत के सिवा कुछ नहीं।"

सहीह बुख़ारी 1773 · सहीह मुस्लिम 1349 · सहीह

“रमज़ान में उमरा (सवाब में) हज के बराबर है।”

सहीह बुख़ारी 1782 · सहीह बुख़ारी 1863 · सहीह

सय्यिदा आइशा (रज़ि.) ने जिहाद के बारे में पूछा तो नबी ﷺ ने फ़रमाया: “(तुम औरतों के लिए) बेहतरीन जिहाद मक़बूल हज है।”

सहीह बुख़ारी 1520 · सहीह

हज और उमरे में फ़र्क़

उमरा साल के किसी भी वक़्त हो सकता है और इसके चार काम हैं: एहराम, तवाफ़, सई, और बाल मुंडवाना या कटवाना। हज सिर्फ़ 8 से 13 ज़िलहिज्जा तक होता है; इसमें अरफ़ात, मुज़दलिफ़ा, मिना, रमी और क़ुर्बानी भी शामिल हैं, और यह ताक़त रखने वाले पर ज़िंदगी में एक बार फ़र्ज़ है।

🧳 सफ़र से पहले

ٱلْحَجُّ أَشْهُرٌ مَّعْلُومَٰتٌ ۚ فَمَن فَرَضَ فِيهِنَّ ٱلْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوقَ وَلَا جِدَالَ فِى ٱلْحَجِّ ... ﴿١٩٧﴾

हज के महीने मालूम हैं। जो इनमें हज का इरादा पक्का कर ले तो हज में न बेहयाई की बात हो, न गुनाह और न झगड़ा।

सूरह अल-बक़रा (2:197)

"अपने हज के तरीक़े मुझसे सीख लो।" — इसलिए जाने से पहले नबी ﷺ का तरीक़ा सीखें; यह गाइड क़दम-ब-क़दम उसी के मुताबिक़ है।

सहीह मुस्लिम 1297 · सहीह

- नीयत सिर्फ़ अल्लाह के लिए ख़ालिस करें, सच्ची तौबा करें और जिसका हक़ मारा हो उससे माफ़ी माँग लें।
- क़र्ज़ अदा करें या उसका इंतिज़ाम करें, अमानतें लौटाएँ और वसीयत लिख लें।
- हलाल माल इस्तेमाल करें, और सफ़र और घर वालों के लिए काफ़ी ख़र्च का इंतिज़ाम करें।
- सफ़र से पहले इस गाइड की दुआएँ और तवाफ़ व सई का तरीक़ा सीख लें — घर में बच्चों के साथ मश्क़ करें।

मसनून **घर से निकलते वक़्त**

بِسْمِ اللَّهِ، تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ، لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ

Bismillāh, tawakkaltu ʻalallāh, lā ḥawla wa lā quwwata illā billāh.

अल्लाह के नाम से, मैंने अल्लाह पर भरोसा किया, गुनाह से बचने की ताक़त और नेकी करने की क़ुव्वत अल्लाह ही की तौफ़ीक़ से है।

सुनन अबी दाऊद 5095 · जामे तिर्मिज़ी 3426 · सहीह — अल्लामा अलबानी के मुताबिक़

मसनून **घर वाले हाजी को रुख़्सत करते वक़्त**

أَسْتَوْدِعُ اللَّهَ دِينَكَ، وَأَمَانَتَكَ، وَخَوَاتِيمَ عَمَلِكَ

Astawdi‘ullāha dīnaka wa amānataka wa khawātīma ‘amalik.

मैं तुम्हारा दीन, तुम्हारी अमानत और तुम्हारे आमाल का अंजाम अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ।

जामे तिर्मिज़ी 3443 · सुनन अबी दाऊद 2600 · सहीह — अल्लामा अलबानी के मुताबिक़

मसनून **रुख़्सत की एक और दुआ — नबी ﷺ ने सय्यिदना अबू हुरैरा (रज़ि.) से फ़रमाई**

أَسْتَوْدِعُكَ اللَّهَ الَّذِي لَا تَضِيعُ وَدَائِعُهُ

Astawdi‘ukallāhal-ladhī lā taḍī‘u wadā’i‘uh.

मैं तुम्हें उस अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ जिसके सुपुर्द की हुई चीज़ें ज़ाया नहीं होतीं।

सुनन इब्ने माजा 2825 · सहीह — अल्लामा अलबानी के मुताबिक़

मसनून **सफ़र शुरू करते वक़्त — गाड़ी, बस या जहाज़ में**

اللَّهُ أَكْبَرُ، اللَّهُ أَكْبَرُ، اللَّهُ أَكْبَرُ، سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ، وَإِنَّا إِلَى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ، اللَّهُمَّ إِنَّا نَسْأَلُكَ فِي سَفَرِنَا هَذَا الْبِرَّ وَالتَّقْوَى، وَمِنَ الْعَمَلِ مَا تَرْضَى، اللَّهُمَّ هَوِّنْ عَلَيْنَا سَفَرَنَا هَذَا وَاطْوِ عَنَّا بُعْدَهُ، اللَّهُمَّ أَنْتَ الصَّاحِبُ فِي السَّفَرِ، وَالْخَلِيفَةُ فِي الْأَهْلِ، اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ وَعْثَاءِ السَّفَرِ، وَكَآبَةِ الْمَنْظَرِ، وَسُوءِ الْمُنْقَلَبِ فِي الْمَالِ وَالْأَهْلِ

Allāhu akbar (×3). Subḥānal-ladhī sakhkhara lanā hādhā wa mā kunnā lahu muqrinīn, wa innā ilā rabbinā la-munqalibūn. Allāhumma innā nas'aluka fī safarinā hādhal-birra wat-taqwā, wa minal-'amali mā tarḍā. Allāhumma hawwin 'alaynā safaranā hādhā waṭwi 'annā bu'dah. Allāhumma antaṣ-ṣāḥibu fis-safar, wal-khalīfatu fil-ahl. Allāhumma innī a'ūdhu bika min wa'thā'is-safar, wa ka'ābatil-manẓar, wa sū'il-munqalabi fil-māli wal-ahl.

अल्लाह सबसे बड़ा है (तीन बार)। पाक है वह ज़ात जिसने इसे हमारे बस में कर दिया, वरना हम इसे क़ाबू में न ला सकते थे, और बेशक हम अपने रब की तरफ़ लौटने वाले हैं। ऐ अल्लाह! हम अपने इस सफ़र में तुझसे नेकी और तक़वा का सवाल करते हैं, और ऐसे अमल का जो तुझे पसंद हो। ऐ अल्लाह! हमारा यह सफ़र आसान कर दे और इसकी दूरी हम पर लपेट दे। ऐ अल्लाह! तू ही सफ़र का साथी और घर वालों का निगहबान है। ऐ अल्लाह! मैं सफ़र की मशक़्क़त, बुरे मंज़र और माल और घर वालों में बुरी वापसी से तेरी पनाह माँगता हूँ।

सहीह मुस्लिम 1342 · सहीह

मसनून किसी जगह ठहरते या होटल पहुँचते वक़्त

أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ

A'ūdhu bi-kalimātillāhit-tāmmāti min sharri mā khalaq.

मैं अल्लाह के कामिल कलिमात की पनाह माँगता हूँ उसकी मख़लूक़ के शर से। (फिर उस जगह से रवाना होने तक कोई चीज़ उसे नुक़सान नहीं देगी।)

सहीह मुस्लिम 2708 · सहीह

"तीन दुआएँ ज़रूर क़ुबूल होती हैं, इनमें कोई शक नहीं: वालिद की दुआ, मुसाफ़िर की दुआ और मज़लूम की दुआ।" — रास्ते में अपने घर वालों के लिए ख़ूब दुआ करें।

सुनन अबी दाऊद 1536 · जामे तिर्मिज़ी 1905 · हसन

⚪ पहला क़दम — मीक़ात पर एहराम

एहराम वह मुक़द्दस हालत है जिसमें हाजी उमरे या हज की नीयत से दाख़िल होता है। यह मीक़ात पर बाँधा जाता है, और हाजी एहराम के बग़ैर मीक़ात से आगे नहीं जा सकता।

1 मीक़ात — जहाँ से एहराम शुरू होता है

नबी ﷺ ने अहल-ए-मदीना के लिए ज़ुल-हुलैफ़ा, शाम के लिए जुहफ़ा, नज्द के लिए क़र्नुल-मनाज़िल, यमन के लिए यलमलम और इराक़ के लिए ज़ात-ए-इर्क़ को मीक़ात मुक़र्रर फ़रमाया — उनके लिए भी और हर उस शख़्स के लिए जो वहाँ से गुज़रे। जो इसके अंदर रहता हो वह अपने घर से एहराम बाँधे। हवाई जहाज़ में सवार होने से पहले एहराम का लिबास पहन लें और जहाज़ के मीक़ात से गुज़रने से पहले नीयत कर लें; अमला आम तौर पर ऐलान कर देता है।

सहीह बुख़ारी 1524 · सहीह मुस्लिम 1181 · सहीह मुस्लिम 1183 · सहीह

2 एहराम से पहले ग़ुस्ल और ख़ुशबू

नबी ﷺ ने एहराम के लिए अपने कपड़े उतारे और ग़ुस्ल फ़रमाया, और सय्यिदा आइशा (रज़ि.) ने एहराम बाँधने से पहले आपको ख़ुशबू लगाई। ख़ुशबू बदन पर लगाएँ, एहराम की चादर पर नहीं; नाख़ुन और बाल एहराम से पहले तराश लें, बाद में नहीं।

सहीह बुख़ारी 1539 · सहीह मुस्लिम 1189 · जामे तिर्मिज़ी 830 · सहीह

3 क्या पहनें

मर्द: दो सादा चादरें — एक तहबंद (इज़ार) और एक कंधों पर (रिदा) — और चप्पल; क़मीस, शलवार, अमामा, टोपी या बंद जूते नहीं। ख़्वातीन: अपना आम बा-पर्दा लिबास किसी भी रंग का, मगर निक़ाब और दस्ताने नहीं; ना-महरम मर्द क़रीब से गुज़रें तो दुपट्टे का कुछ हिस्सा चेहरे पर लटका सकती हैं।

सहीह बुख़ारी 1542 · सहीह मुस्लिम 1177 · सहीह बुख़ारी 1838 · सहीह

4 नीयत — अपने अमल का नाम लें

दिल में नीयत करें और जो अमल शुरू कर रहे हैं उसका नाम ज़बान से लें: उमरे के लिए "लब्बैका उमरतन" या हज के लिए "लब्बैका हज्जन" — नबी ﷺ ने इसी तरह अपने अमल का नाम लिया। सहाबा-ए-किराम ने तीन तरह हज किया: पहले उमरा फिर हज (तमत्तो), दोनों एक साथ (क़िरान), या सिर्फ़ हज (इफ़राद)।

दूर के मुल्कों से आने वाले अक्सर हाजी तमत्तो करते हैं। अपने हज की क़िस्म की तफ़सील के लिए अपने ग्रुप के आलिम की रहनुमाई पर अमल करें।

सहीह मुस्लिम 1232 · सहीह मुस्लिम 1211 · सहीह

मसनून अगर बीमारी या रुकावट का डर हो — एहराम के वक़्त शर्त

اللَّهُمَّ مَحِلِّي حَيْثُ حَبَسْتَنِي

Allāhumma maḥillī ḥaythu ḥabastanī.

ऐ अल्लाह! जहाँ तू मुझे रोक दे वहीं मेरा एहराम खोलने की जगह है।

नबी ﷺ ने यह सय्यिदा ज़ुबाआ बिन्त ज़ुबैर (रज़ि.) को सिखाया जो बीमार थीं और उन्हें हज पूरा न कर सकने का डर था।

सहीह बुख़ारी 5089 · सहीह मुस्लिम 1207 · सहीह

मसनून तल्बिया — एहराम से तवाफ़ (उमरा) या पहली रमी (हज) तक

لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ، لَبَّيْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ لَبَّيْكَ، إِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ، لَا شَرِيكَ لَكَ

Labbayka Allāhumma labbayk, labbayka lā sharīka laka labbayk, innal-ḥamda wan-ni'mata laka wal-mulk, lā sharīka lak.

हाज़िर हूँ ऐ अल्लाह! मैं हाज़िर हूँ। हाज़िर हूँ, तेरा कोई शरीक नहीं, मैं हाज़िर हूँ। बेशक सारी तारीफ़ और नेमत तेरी ही है और बादशाही भी। तेरा कोई शरीक नहीं।

मर्द बुलंद आवाज़ से पढ़ें — जिब्रील (अलै.) ने नबी ﷺ से कहा कि अपने सहाबा को तल्बिया बुलंद आवाज़ से पढ़ने का हुक्म दें (अबू दाऊद 1814, तिर्मिज़ी 829, सहीह)। ख़्वातीन इतनी आवाज़ से पढ़ें कि ख़ुद सुन सकें। खड़े, चलते या सवारी पर बार-बार पढ़ते रहें। यह तवाफ़ शुरू होने पर (उमरा) या जमरा-ए-अक़बा की रमी पर (हज, बुख़ारी 1685, मुस्लिम 1281) ख़त्म होता है।

सहीह बुख़ारी 1549 · सहीह मुस्लिम 1184 · सहीह

5 एहराम में मना काम

बाल या नाख़ुन काटना, ख़ुशबू लगाना, शिकार करना, निकाह करना और मियाँ-बीवी का ताल्लुक़। मर्द सिले हुए कपड़े नहीं पहन सकते और सिर नहीं ढाँप सकते; ख़्वातीन निक़ाब और दस्ताने नहीं पहन सकतीं। नहाना, एहराम की चादरें बदलना, बग़ैर ख़ुशबू का साबुन, छतरी, बेल्ट और घड़ी इस्तेमाल करना जाइज़ है।

सूरह अल-बक़रा (2:196) · सूरह अल-माइदा (5:95) · सहीह मुस्लिम 1409 · सहीह बुख़ारी 1542 · सहीह बुख़ारी 1838 · सहीह

🕌 दूसरा क़दम — मस्जिद-ए-हराम में दाख़िला

दायाँ पाँव पहले रखकर आजिज़ी से दाख़िल हों, और तवाफ़ के लिए काबा तक पहुँचने तक तल्बिया पढ़ते रहें।

मसनून **मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त**

اللَّهُمَّ افْتَحْ لِي أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ

Allāhummaftaḥ lī abwāba raḥmatik.

ऐ अल्लाह! मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे।

सहीह मुस्लिम 713 · सहीह

मसनून **दाख़िल होते वक़्त यह भी — शैतान से हिफ़ाज़त**

أَعُوذُ بِاللَّهِ الْعَظِيمِ، وَبِوَجْهِهِ الْكَرِيمِ، وَسُلْطَانِهِ الْقَدِيمِ، مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ

A'ūdhu billāhil-'aẓīm, wa bi-wajhihil-karīm, wa sulṭānihil-qadīm, minash-shayṭānir-rajīm.

मैं अज़मत वाले अल्लाह की, उसके करीम चेहरे की और उसकी हमेशा की बादशाही की पनाह माँगता हूँ मरदूद शैतान से। (जो यह पढ़े, शैतान कहता है: यह सारा दिन मुझसे महफ़ूज़ हो गया।)

सुनन अबी दाऊद 466 · सहीह — अल्लामा अलबानी के मुताबिक़

मसनून मस्जिद से निकलते वक़्त (बायाँ पाँव पहले)

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ

Allāhumma innī as'aluka min faḍlik.

ऐ अल्लाह! मैं तुझसे तेरे फ़ज़्ल का सवाल करता हूँ।

सहीह मुस्लिम 713 · सहीह

इज़ाफ़ी काबा पर पहली नज़र पड़ने पर — बहुत मशहूर

اللَّهُمَّ زِدْ هَذَا الْبَيْتَ تَشْرِيفًا وَتَعْظِيمًا وَتَكْرِيمًا وَمَهَابَةً

Allāhumma zid hādhal-bayta tashrīfan wa ta'ẓīman wa takrīman wa mahābah.

ऐ अल्लाह! इस घर की शराफ़त, अज़मत, इज़्ज़त और हैबत में इज़ाफ़ा फ़रमा।

यह इब्ने जुरैज से बग़ैर मुत्तसिल सनद के मरवी है, इसलिए ज़ईफ़ है। काबा देखने की कोई ख़ास दुआ सहीह सनद से साबित नहीं — यह अपने अल्फ़ाज़ में अल्लाह से जो चाहें माँगने का अच्छा मौक़ा है।

इमाम शाफ़ई (अल-उम्म) व बैहक़ी — सनद मुरसल · सनद ज़ईफ़ — नोट देखें

🔄 तीसरा क़दम — तवाफ़: सात चक्कर

काबा को अपनी बाईं तरफ़ रखकर उसके गिर्द सात चक्कर लगाएँ; हर चक्कर हजर-ए-असवद से शुरू होकर वहीं ख़त्म हो।

1 बा-वुज़ू हों

मक्का पहुँचकर नबी ﷺ ने सबसे पहले वुज़ू किया, फिर तवाफ़ किया। "बैतुल्लाह का तवाफ़ नमाज़ की तरह है, सिवाय इसके कि इसमें बात कर सकते हो — तो जो बात करे वह सिर्फ़ भलाई की बात करे।"

सहीह बुख़ारी 1614 · जामे तिर्मिज़ी 960 · सहीह — अल्लामा अलबानी के मुताबिक़

2 हजर-ए-असवद से आग़ाज़

हजर-ए-असवद के सामने आएँ; आसानी से हो सके तो उसे बोसा दें, वरना हाथ लगाएँ, वरना दाएँ हाथ से उसकी तरफ़ इशारा करें — नबी ﷺ ने यह सब किया है। हर बार गुज़रते हुए "अल्लाहु अकबर" कहें। सय्यिदना उमर (रज़ि.) ने फ़रमाया: "मैं जानता हूँ कि तू एक पत्थर है, न नुक़सान दे सकता है न नफ़ा; अगर मैंने नबी ﷺ को तुझे बोसा देते न देखा होता तो मैं तुझे बोसा न देता।"

सहीह बुख़ारी 1597 · सहीह मुस्लिम 1270 · सहीह बुख़ारी 1607 · सहीह बुख़ारी 1613 · सहीह

मसनून हजर-ए-असवद के पास — हर चक्कर में

اللَّهُ أَكْبَرُ

Allāhu akbar.

अल्लाह सबसे बड़ा है।

सहीह बुख़ारी 1613 · सहीह

इज़ाफ़ी हजर-ए-असवद के पास — सय्यिदना इब्ने उमर (रज़ि.) का अमल

بِسْمِ اللَّهِ وَاللَّهُ أَكْبَرُ

Bismillāhi wallāhu akbar.

अल्लाह के नाम से, और अल्लाह सबसे बड़ा है।

सय्यिदना इब्ने उमर (रज़ि.) रुक्न को छूते वक़्त यह कहते थे; उलमा ने इसकी सनद को सहीह कहा है।

बैहक़ी, अस-सुनन अल-कुबरा · सहाबा-ए-किराम का अमल — सनद सहीह

3 मर्द: इज़्तिबा और रमल

पहुँचने के बाद पहले तवाफ़ में मर्द दायाँ कंधा खुला रखें (इज़्तिबा) और पहले तीन चक्करों में छोटे क़दमों से तेज़ चलें (रमल), फिर आख़िरी चार में आम रफ़्तार से चलें। ख़्वातीन आम रफ़्तार से चलें और पूरी तरह ढकी रहें।

सुनन अबी दाऊद 1883 · सहीह बुख़ारी 1617 · सहीह मुस्लिम 1261 · हसन

4 रुक्न-ए-यमानी

सय्यिदना इब्ने उमर (रज़ि.) फ़रमाते हैं कि उन्होंने नबी ﷺ को बैतुल्लाह के किसी हिस्से को छूते नहीं देखा सिवाय दो यमानी रुक्नों (हजर-ए-असवद वाला कोना और रुक्न-ए-यमानी) के। आसानी हो तो रुक्न-ए-यमानी को हाथ लगाएँ — बोसा नहीं — वरना बस आगे बढ़ जाएँ।

सहीह बुख़ारी 1609 · सहीह मुस्लिम 1267 · सहीह

मसनून **रुक्न-ए-यमानी और हजर-ए-असवद के दरमियान**

رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً، وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً، وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ

Rabbanā ātinā fid-dunyā ḥasanah, wa fil-ākhirati ḥasanah, wa qinā ʿadhāban-nār.

ऐ हमारे रब! हमें दुनिया में भलाई दे और आख़िरत में भलाई दे, और हमें आग के अज़ाब से बचा।

सूरह अल-बक़रा (2:201) · सुनन अबी दाऊद 1892 · हसन

5 हर चक्कर का बाक़ी हिस्सा

नबी ﷺ से हर चक्कर की कोई ख़ास दुआ मनक़ूल नहीं। किसी भी ज़बान में दुआ करें, क़ुरआन पढ़ें, ज़िक्र करें या इस गाइड की कोई भी दुआ पढ़ें। सातवाँ चक्कर हजर-ए-असवद पर ख़त्म हो तो दायाँ कंधा दोबारा ढाँप लें।

जामे तिर्मिज़ी 960 · सहीह — अल्लामा अलबानी के मुताबिक़

6 अगर औरत के अय्याम शुरू हो जाएँ

नबी ﷺ ने सय्यिदा आइशा (रज़ि.) से फ़रमाया: “हाजी जो कुछ करता है तुम भी करो, सिवाय बैतुल्लाह के तवाफ़ के जब तक पाक न हो जाओ।” वह एहराम में रहे, तल्बिया, ज़िक्र और दुआ करे और अरफ़ात में वुक़ूफ़ करे।

सहीह बुख़ारी 305 · सहीह मुस्लिम 1211 · सहीह

🤲 चौथा क़दम — मक़ाम-ए-इब्राहीम पर दो रकअत, फिर ज़मज़म

... وَٱتَّخِذُواْ مِن مَّقَامِ إِبۡرَٰهِـۧمَ مُصَلًّى ... ﴿١٢٥﴾

और मक़ाम-ए-इब्राहीम को नमाज़ की जगह बनाओ।

सूरह अल-बक़रा (2:125)

1 दो रकअत नमाज़

तवाफ़ के बाद नबी ﷺ यह आयत पढ़ते हुए मक़ाम-ए-इब्राहीम की तरफ़ गए, मक़ाम को अपने और काबा के दरमियान रखा और दो रकअत पढ़ीं जिनमें सूरह अल-काफ़िरून और सूरह अल-इख़लास पढ़ी। भीड़ हो तो मस्जिद में कहीं भी पढ़ लें।

सहीह मुस्लिम 1218 · सहीह

2 ज़मज़म पिएँ और दुआ करें

“ज़मज़म का पानी उसी मक़सद के लिए है जिसके लिए पिया जाए।” “यह बाबरकत है, यह पेट भरने वाला खाना है।” नबी ﷺ ने अपने हज में ज़मज़म पिया। ख़ूब सैर होकर पिएँ और अल्लाह से अपनी ज़रूरत माँगें।

सुनन इब्ने माजा 3062 · सहीह मुस्लिम 2473 · सहीह मुस्लिम 1218 · सहीह — अल्लामा अलबानी के मुताबिक़

इज़ाफ़ी **ज़मज़म पीते वक़्त — सय्यिदना इब्ने अब्बास (रज़ि.) की दुआ**

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ عِلْمًا نَافِعًا، وَرِزْقًا وَاسِعًا، وَشِفَاءً مِنْ كُلِّ دَاءٍ

Allāhumma innī as'aluka 'ilman nāfi'ā, wa rizqan wāsi'ā, wa shifā'an min kulli dā'.

ऐ अल्लाह! मैं तुझसे नफ़ा देने वाला इल्म, कुशादा रिज़्क़ और हर बीमारी से शिफ़ा माँगता हूँ।

इसकी सनद ज़ईफ़ है; मफ़हूम अच्छा है और आम दुआ के तौर पर पढ़ी जा सकती है, क्योंकि नबी ﷺ ने फ़रमाया कि ज़मज़म उसी के लिए है जिसके लिए पिया जाए।

दारक़ुत्नी व हाकिम · सनद ज़ईफ़ — नोट देखें

⛰️ पाँचवाँ क़दम — सफ़ा और मरवा के दरमियान सई

दो रकअत के बाद नबी ﷺ हजर-ए-असवद के पास वापस आए और उसे छुआ, फिर सफ़ा की तरफ़ निकले (मुस्लिम 1218)।

إِنَّ ٱلصَّفَا وَٱلْمَرْوَةَ مِن شَعَآئِرِ ٱللَّهِ ... ﴿١٥٨﴾

बेशक सफ़ा और मरवा अल्लाह की निशानियों में से हैं।

सूरह अल-बक़रा (2:158)

मसनून **सफ़ा के क़रीब पहुँचकर — सिर्फ़ सई के शुरू में**

إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ، أَبْدَأُ بِمَا بَدَأَ اللَّهُ بِهِ

Innaṣ-ṣafā wal-marwata min sha'ā'irillāh. Abda'u bimā bada'allāhu bih.

बेशक सफ़ा और मरवा अल्लाह की निशानियों में से हैं। मैं वहीं से शुरू करता हूँ जहाँ से अल्लाह ने शुरू किया।

सहीह मुस्लिम 1218 · सहीह

मसनून सफ़ा और मरवा पर — काबा की तरफ़ रुख़ करके, तीन बार, दरमियान में अपनी दुआ

اللَّهُ أَكْبَرُ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ، أَنْجَزَ وَعْدَهُ، وَنَصَرَ عَبْدَهُ، وَهَزَمَ الْأَحْزَابَ وَحْدَهُ

Allāhu akbar. Lā ilāha illallāhu waḥdahu lā sharīka lah, lahul-mulku wa lahul-ḥamd, wa huwa ʻalā kulli shayʼin qadīr. Lā ilāha illallāhu waḥdah, anjaza waʻdah, wa naṣara ʻabdah, wa hazamal-aḥzāba waḥdah.

अल्लाह सबसे बड़ा है। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं; उसी की बादशाही है और उसी की तारीफ़, और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है; उसने अपना वादा पूरा किया, अपने बंदे की मदद की और अकेले ही (दुश्मन) लश्करों को शिकस्त दी।

सहीह मुस्लिम 1218 · सहीह

1 सात चक्कर, सफ़ा से मरवा तक

सफ़ा से मरवा एक चक्कर है, मरवा से वापस सफ़ा दूसरा, और इसी तरह — सातवाँ चक्कर मरवा पर ख़त्म होता है। दो हरी रोशनियों (पुरानी वादी) के दरमियान मर्द तेज़ चलें जैसे नबी ﷺ चले; ख़्वातीन आम रफ़्तार से चलें। पूरी सई में दुआ, ज़िक्र और तिलावत करते रहें।

सहीह मुस्लिम 1218 · सहीह

इज़ाफ़ी **सई के दौरान — सय्यिदना इब्ने मसऊद और इब्ने उमर (रज़ि.) का अमल**

رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ، إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعَزُّ الْأَكْرَمُ

Rabbighfir warḥam, innaka antal-aʿazzul-akram.

ऐ मेरे रब! बख़्श दे और रहम फ़रमा, बेशक तू सबसे ज़्यादा इज़्ज़त वाला और सबसे ज़्यादा करम वाला है।

यह इन दो सहाबा से सहीह सनद के साथ मरवी है; यह ख़ुद नबी ﷺ से मनक़ूल नहीं।

इब्ने अबी शैबा, अल-मुसन्नफ़ · सहाबा-ए-किराम का अमल — सनद सहीह

✂️ छठा क़दम — बाल मुंडवाना या कटवाना

... مُحَلِّقِينَ رُءُوسَكُمْ وَمُقَصِّرِينَ ... ﴿٢٧﴾

... अपने सिर मुंडवाए हुए और बाल कतरवाए हुए।

सूरह अल-फ़त्ह (48:27)

नबी ﷺ ने फ़रमाया: "ऐ अल्लाह! सिर मुंडवाने वालों पर रहम फ़रमा।" सहाबा ने अर्ज़ किया: "और बाल कतरवाने वालों पर?" आप ﷺ ने फिर वही दुआ की, फिर फ़रमाया: "और कतरवाने वालों पर भी।"

सहीह बुख़ारी 1727 · सहीह मुस्लिम 1301 · सहीह

1 मर्द

पूरा सिर मुंडवाना अफ़ज़ल है; पूरे सिर से बाल कतरवाना भी जाइज़ है।

सहीह बुख़ारी 1727 · सहीह

2 ख़्वातीन

"औरतों पर सिर मुंडवाना नहीं, औरतों पर सिर्फ़ बाल कतरवाना है।" औरत अपने बाल इकट्ठे करके सिरों से तक़रीबन एक पोर के बराबर काट ले, पर्दे में।

सुनन अबी दाऊद 1984 · सहीह — अल्लामा अलबानी के मुताबिक़

3 आपका उमरा मुकम्मल हो गया

बाल मुंडवाने या कटवाने के साथ उमरा मुकम्मल हो जाता है और एहराम की सारी पाबंदियाँ ख़त्म हो जाती हैं। अल्लाह का शुक्र अदा करें और उससे क़ुबूलियत की दुआ करें।

📋 उमरा एक नज़र में

यह जदवल प्रिंट कर लें या फ़ोन में रखें — पूरा उमरा छह क़दमों में।

मरहला	क्या करना है	क्या पढ़ना है
1. एहराम	ग़ुस्ल, एहराम का लिबास, मीक़ात पर नीयत	“लब्बैका उमरतन”, फिर तल्बिया
2. मस्जिद-ए-हराम	दायाँ पाँव पहले	मस्जिद में दाख़िले की दुआ
3. तवाफ़	हजर-ए-असवद से 7 चक्कर, काबा बाईं तरफ़	हजर-ए-असवद पर “अल्लाहु अकबर”; उससे पहले “रब्बना आतिना …”; कोई भी दुआ
4. दो रकअत + ज़मज़म	हो सके तो मक़ाम-ए-इब्राहीम के पीछे; फिर ज़मज़म	सूरह अल-काफ़िरून और अल-इख़लास; अपनी दुआ
5. सई	सफ़ा से मरवा तक 7 चक्कर	शुरू में “इन्नस-सफ़ा …”; हर पहाड़ी पर तहलील
6. हल्क़ / तक़सीर	मर्द मुंडवाएँ या कतरवाएँ; ख़्वातीन एक पोर	उमरा मुकम्मल — अल्लाह का शुक्र

17 हज दिन-ब-दिन (8 से 13 ज़िलहिज्जा)

सय्यिदना जाबिर (रज़ि.) की लंबी हदीस से ख़ुलासा जिसमें नबी ﷺ के हज का बयान है (मुस्लिम 1218)। तमत्तो करने वाले अपना उमरा कर चुके होते हैं और 8 ज़िलहिज्जा तक एहराम से बाहर होते हैं।

दिन	कहाँ	क्या करना है
8 — यौम-ए-तरविया	मिना	अपनी जगह से हज का एहराम, तल्बिया; ज़ुहर, अस्र, मग़रिब, इशा और अगली फ़ज्र मिना में
9 — यौम-ए-अरफ़ा	अरफ़ात, फिर मुज़दलिफ़ा	तुलू-ए-आफ़ताब के बाद अरफ़ात; इमाम के साथ ज़ुहर व अस्र; ग़ुरूब तक दुआ; फिर सुकून से मुज़दलिफ़ा, वहाँ मग़रिब व इशा और रात को आराम
10 — यौमुन-नहर	मुज़दलिफ़ा → मिना → मक्का	फ़ज्र और रोशनी तक ज़िक्र; जमरा-ए-अक़बा की रमी (7); क़ुर्बानी; हल्क़ या तक़सीर; तवाफ़-ए-इफ़ाज़ा और सई
11 और 12	मिना	रातें मिना में; ज़वाल के बाद तीनों जमरात की रमी (हर एक को 7); 12 तारीख़ को ग़ुरूब से पहले जा सकते हैं
13	मिना	जो रुक जाएँ वह ज़वाल के बाद दोबारा तीनों जमरात की रमी करके रवाना हों
वापसी से पहले	मक्का	तवाफ़-ए-विदा — मक्का में आख़िरी काम

8 8 ज़िलहिज्जा — मिना में यौम-ए-तरविया

8 ज़िलहिज्जा को सहाबा ने हज का एहराम बाँधा और मिना गए, जहाँ नबी ﷺ ने ज़ुहर, अस्र, मग़रिब, इशा और फ़ज्र पढ़ी और सूरज निकलने तक ठहरे रहे।

सहीह मुस्लिम 1218 · सहीह

🌅 9 ज़िलहिज्जा — अरफ़ात और मुज़दलिफ़ा की रात

9 “हज अरफ़ा ही है”

अरफ़ात में ठहरना (वुक़ूफ़) हज की जान है; जिससे यह रह गया उसका हज रह गया। अरफ़ात की हुदूद के अंदर रहें, इमाम के साथ ज़ुहर व अस्र पढ़ें, फिर क़िबला-रुख़ होकर हाथ उठाएँ और सूरज डूबने तक दुआ करते रहें — जैसे नबी ﷺ ने किया।

जामे तिर्मिज़ी 889 · सुनन अबी दाऊद 1949 · सुनन नसाई 3016 · सुनन इब्ने माजा 3015 · सहीह मुस्लिम 1218 · सहीह — अल्लामा अलबानी के मुताबिक़

मसनून सबसे बेहतरीन दुआ — अरफ़ा के दिन

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

Lā ilāha illallāhu waḥdahu lā sharīka lah, lahul-mulku wa lahul-ḥamd, wa huwa ‘alā kulli shay’in qadīr.

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं; उसी की बादशाही है और उसी की तारीफ़, और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। (“बेहतरीन दुआ अरफ़ा के दिन की दुआ है, और सबसे बेहतर बात जो मैंने और मुझसे पहले नबियों ने कही वह यह है …”)

जामे तिर्मिज़ी 3585 · हसन

> “कोई दिन ऐसा नहीं जिसमें अल्लाह अरफ़ा के दिन से ज़्यादा बंदों को जहन्नम से आज़ाद करता हो।”
>
> **सहीह मुस्लिम 1348 · सहीह**

घर वालों के लिए: अरफ़ा के दिन का रोज़ा “पिछले एक साल और अगले एक साल के गुनाहों का कफ़्फ़ारा है।”

सहीह मुस्लिम 1162 · सहीह

... فَإِذَآ أَفَضْتُم مِّنْ عَرَفَٰتٍ فَٱذْكُرُوا۟ ٱللَّهَ عِندَ ٱلْمَشْعَرِ ٱلْحَرَامِ ...

﴿١٩٨﴾

फिर जब तुम अरफ़ात से लौटो तो मशअर-ए-हराम (मुज़दलिफ़ा) के पास अल्लाह का ज़िक्र करो।

सूरह अल-बक़रा (2:198)

मुज़दलिफ़ा की रात

ग़ुरूब के बाद सुकून से अरफ़ात से रवाना हों — नबी ﷺ फ़रमाते रहे: “लोगो! सुकून से, सुकून से।” मुज़दलिफ़ा में मग़रिब और इशा एक साथ पढ़ें, सो जाएँ, फ़ज्र जल्दी पढ़ें, फिर ख़ूब रोशनी होने तक अल्लाह का ज़िक्र, तकबीर, तहलील और दुआ करें। कमज़ोरों, बूढ़ों और उनके साथ ख़्वातीन को रात में पहले निकलने की इजाज़त दी गई।

रमी के लिए छोटी कंकरियाँ यहाँ से या मिना से चुन लें।

सहीह बुख़ारी 1671 · सहीह मुस्लिम 1218 · सहीह मुस्लिम 1290 · सहीह

🐑 10 ज़िलहिज्जा — क़ुर्बानी का दिन

10 जमरा-ए-अक़बा की रमी

बड़े जमरा को एक-एक करके सात छोटी कंकरियाँ मारें और हर कंकरी के साथ "अल्लाहु अकबर" कहें। कंकरियाँ चने के दाने जितनी छोटी हों — नबी ﷺ ने फ़रमाया: "ऐसी ही कंकरियाँ, और दीन में ग़ुलू से बचो।" यह रमी शुरू करते ही तल्बिया बंद कर दें।

सहीह मुस्लिम 1218 · सहीह बुख़ारी 1685 · सुनन नसाई 3057 · सहीह

मसनून क़ुर्बानी के वक़्त (या जब आपकी तरफ़ से क़ुर्बानी हो)

بِسْمِ اللَّهِ وَاللَّهُ أَكْبَرُ

Bismillāhi wallāhu akbar.

अल्लाह के नाम से, और अल्लाह सबसे बड़ा है।

सहीह मुस्लिम 1966 · सहीह

10 क़ुर्बानी, हल्क़, फिर तवाफ़-ए-इफ़ाज़ा

रमी के बाद नबी ﷺ क़ुर्बानगाह गए और क़ुर्बानी की, फिर सिर मुंडवाया, फिर बैतुल्लाह गए और तवाफ़ किया (तवाफ़-ए-इफ़ाज़ा, जो हज का रुक्न है), और जिन पर सई है वह उसके बाद सई करें। लोगों ने इन कामों की तरतीब आगे-पीछे होने के बारे में पूछा तो आप ﷺ ने फ़रमाया: "कर लो, कोई हरज नहीं।"

रमी और हल्क़ के बाद एहराम की सब पाबंदियाँ ख़त्म हो जाती हैं सिवाय मियाँ-बीवी के ताल्लुक़ के, जो तवाफ़-ए-इफ़ाज़ा के बाद हलाल होता है।

सूरह अल-हज (22:29) · सहीह मुस्लिम 1218 · सहीह बुख़ारी 1736 · सहीह मुस्लिम 1306 · सहीह

इज़ाफ़ी **रमी के बाद — बहुत मशहूर**

اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ حَجًّا مَبْرُورًا، وَذَنْبًا مَغْفُورًا

Allāhummaj'alhu ḥajjan mabrūran, wa dhamban maghfūrā.

ऐ अल्लाह! इसे मक़बूल हज और बख़्शा हुआ गुनाह बना दे।

सय्यिदना इब्ने मसऊद और इब्ने उमर (रज़ि.) से ज़ईफ़ सनदों के साथ मरवी है। हज्ज-ए-मक़बूल की दुआ किसी भी अल्फ़ाज़ में अच्छी है।

मुसनद अहमद व बैहक़ी · सनद ज़ईफ़ — नोट देखें

🪨 11 से 13 मिना में, और तवाफ़-ए-विदा

وَٱذۡكُرُواْ ٱللَّهَ فِيٓ أَيَّامٖ مَّعۡدُودَٰتٖۚ فَمَن تَعَجَّلَ فِي يَوۡمَيۡنِ فَلَآ إِثۡمَ عَلَيۡهِ ...
﴿٢٠٣﴾

और गिनती के चंद दिनों में अल्लाह को याद करो। फिर जो दो दिन में जल्दी चला जाए उस पर कोई गुनाह नहीं ...

सूरह अल-बक़रा (2:203)

"अय्याम-ए-तशरीक़ खाने-पीने और अल्लाह के ज़िक्र के दिन हैं।"

सहीह मुस्लिम 1141 · सहीह

11–13 तीनों जमरात की रमी

ज़वाल के बाद पहले छोटे जमरा, फिर दरमियाने, फिर जमरा-ए-अक़बा को सात-सात कंकरियाँ तकबीर के साथ मारें। पहले और दूसरे के बाद एक तरफ़ होकर क़िबला-रुख़ खड़े हों, हाथ उठाएँ और लंबी दुआ करें; आख़िरी के बाद न ठहरें — जैसे नबी ﷺ ने किया।

सहीह मुस्लिम 1299 · सहीह बुख़ारी 1751 · सहीह बुख़ारी 1753 · सहीह

इज़ाफ़ी ईद और अय्याम-ए-तशरीक़ की तकबीर — सय्यिदना इब्ने मसऊद (रज़ि.) के अल्फ़ाज़

اللَّهُ أَكْبَرُ، اللَّهُ أَكْبَرُ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَاللَّهُ أَكْبَرُ، اللَّهُ أَكْبَرُ، وَلِلَّهِ الْحَمْدُ

Allāhu akbar, Allāhu akbar, lā ilāha illallāh, wallāhu akbar, Allāhu akbar, wa lillāhil-ḥamd.

अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, और अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, और सारी तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है।

सय्यिदना इब्ने मसऊद (रज़ि.) से सहीह सनद के साथ मरवी है; तकबीर की बुनियाद आयत "गिनती के दिनों में अल्लाह को याद करो" है।

इब्ने अबी शैबा, अल-मुसन्नफ़ · सहाबा-ए-किराम का अमल — सनद सहीह

तवाफ़-ए-विदा

"कोई शख़्स उस वक़्त तक रवाना न हो जब तक उसका आख़िरी काम बैतुल्लाह (का तवाफ़) न हो।" घर लौटने से पहले सात चक्करों का आख़िरी तवाफ़ करें। अय्याम वाली ख़ातून इससे मुस्तसना है।

सहीह मुस्लिम 1327 · सहीह मुस्लिम 1328 · सहीह बुख़ारी 1755 · सहीह

👧 बच्चे हज और उमरे में

> एक ख़ातून ने एक छोटे बच्चे को उठाकर पूछा: “क्या इसका भी हज है?” नबी ﷺ ने फ़रमाया: “हाँ, और तुम्हें अज्र मिलेगा।”
>
> **सहीह मुस्लिम 1336 · सहीह**

- बच्चे का हज या उमरा दुरुस्त और बाइस-ए-अज्र है; बालिग़ होने पर फ़र्ज़ हज उसके ज़िम्मे बाक़ी रहता है।
- छोटे बच्चे की तरफ़ से वालिदैन नीयत करें और तल्बिया पढ़ें, और तवाफ़ व सई में उसे उठाकर चलें।
- सफ़र से पहले तल्बिया, सफ़र की दुआ और “रब्बना आतिना …” सिखा दें — बच्चे जल्दी याद कर लेते हैं और वहाँ शौक़ से पढ़ते हैं।
- बच्चे की जेब में आपके फ़ोन नंबर वाला कार्ड रखें और बिछड़ जाने की सूरत में मिलने की जगह पहले तय कर लें।

🌴 मदीना मुनव्वरा की ज़ियारत

मदीना की ज़ियारत हज या उमरे का हिस्सा नहीं, लेकिन अक्सर हाजी इससे पहले या बाद में वहाँ जाते हैं।

> “मेरी इस मस्जिद में एक नमाज़ दूसरी मस्जिदों की हज़ार नमाज़ों से बेहतर है, सिवाय मस्जिद-ए-हराम के।”
>
> **सहीह बुख़ारी 1190 · सहीह मुस्लिम 1394 · सहीह**

> “मेरे घर और मेरे मिंबर के दरमियान जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ (रियाज़ुल-जन्ना) है।”
>
> **सहीह बुख़ारी 1196 · सहीह मुस्लिम 1391 · सहीह**

> “जो अपने घर में वुज़ू करे, फिर मस्जिद-ए-क़ुबा आकर उसमें नमाज़ पढ़े, उसे उमरे जैसा अज्र मिलता है।” नबी ﷺ हर हफ़्ते (शनिवार) के दिन पैदल या सवारी पर क़ुबा तशरीफ़ ले जाते थे।
>
> **सुनन इब्ने माजा 1412 · सहीह बुख़ारी 1193 · सहीह — अल्लामा अलबानी के मुताबिक़**

नबी ﷺ पर सलाम

السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ

As-salāmu ‘alayka ayyuhan-nabiyyu wa raḥmatullāhi wa barakātuh.

ऐ नबी! आप पर सलाम हो और अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें। अदब और धीमी आवाज़ से सलाम अर्ज़ करें (“अपनी आवाज़ें नबी की आवाज़ से बुलंद न करो”)। “जो कोई मुझ पर सलाम भेजता है, अल्लाह मेरी रूह लौटा देता है यहाँ तक कि मैं उसके सलाम का जवाब देता हूँ।”

सूरह अल-हुजुरात (49:2) · सुनन अबी दाऊद 2041 · सहीह बुख़ारी 831 · हसन

मसनून **जन्नतुल-बक़ी और दूसरी क़ब्रों की ज़ियारत पर**

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الدِّيَارِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُسْلِمِينَ، وَإِنَّا إِنْ شَاءَ اللَّهُ لَلَاحِقُونَ، أَسْأَلُ اللَّهَ لَنَا وَلَكُمُ الْعَافِيَةَ

As-salāmu ‘alaykum ahlad-diyāri minal-mu’minīna wal-muslimīn, wa innā in shā’ Allāhu la-lāḥiqūn, as’alullāha lanā wa lakumul-‘āfiyah.

ऐ इन घरों के रहने वाले मोमिनो और मुसलमानो! तुम पर सलाम हो। हम भी इंशाअल्लाह तुमसे मिलने वाले हैं। मैं अल्लाह से अपने और तुम्हारे लिए आफ़ियत माँगता हूँ।

सहीह मुस्लिम 975 · सहीह

सफ़र की मज़ीद दुआएँ

मसनून **काबा की तामीर के वक़्त इब्राहीम (अलै.) और इस्माईल (अलै.) की दुआ**

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا، إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

Rabbanā taqabbal minnā, innaka antas-samī'ul-'alīm.

ऐ हमारे रब! हमसे क़ुबूल फ़रमा, बेशक तू ही सुनने वाला, जानने वाला है।

सूरह अल-बक़रा (2:127)

मसनून **अपने और अपनी औलाद के लिए — इब्राहीम (अलै.) की दुआ**

رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلَاةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِي، رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ

Rabbij'alnī muqīmaṣ-ṣalāti wa min dhurriyyatī, rabbanā wa taqabbal du'ā'.

ऐ मेरे रब! मुझे नमाज़ क़ायम करने वाला बना और मेरी औलाद को भी। ऐ हमारे रब! मेरी दुआ क़ुबूल फ़रमा।

सूरह इब्राहीम (14:40)

मसनून **हर ज़रूरत के लिए एक मुख़्तसर दुआ**

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْهُدَى، وَالتُّقَى، وَالْعَفَافَ، وَالْغِنَى

Allāhumma innī as'alukal-hudā wat-tuqā wal-'afāfa wal-ghinā.

ऐ अल्लाह! मैं तुझसे हिदायत, तक़वा, पाकदामनी और बेनियाज़ी का सवाल करता हूँ।

सहीह मुस्लिम 2721 · सहीह

“जब मुसलमान अपने भाई के लिए उसकी ग़ैर-मौजूदगी में दुआ करता है तो फ़रिश्ता कहता है: ‘और तुम्हारे लिए भी ऐसा ही हो।’” — अपनी दुआओं में वालिदैन, घर वालों, उस्तादों और सब मुसलमानों को याद रखें।

सहीह मुस्लिम 2732 · सहीह

मसनून **हज या उमरे से घर लौटते वक़्त — तीन बार अल्लाहु अकबर कहने के बाद**

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، آيِبُونَ، تَائِبُونَ، عَابِدُونَ، سَاجِدُونَ، لِرَبِّنَا حَامِدُونَ، صَدَقَ اللَّهُ وَعْدَهُ، وَنَصَرَ عَبْدَهُ، وَهَزَمَ الْأَحْزَابَ وَحْدَهُ

Lā ilāha illallāhu waḥdahu lā sharīka lah, lahul-mulku wa lahul-ḥamd, wa huwa ‘alā kulli shay’in qadīr. Āyibūna, tā’ibūna, ‘ābidūna, sājidūna, li-rabbinā ḥāmidūn. Ṣadaqallāhu wa‘dah, wa naṣara ‘abdah, wa hazamal-aḥzāba waḥdah.

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं; उसी की बादशाही और उसी की तारीफ़ है, और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। हम लौटने वाले हैं, तौबा करने वाले, इबादत करने वाले, सजदा करने वाले, अपने रब की तारीफ़ करने वाले। अल्लाह ने अपना वादा सच्चा किया, अपने बंदे की मदद की और अकेले ही लश्करों को शिकस्त दी।

सहीह बुख़ारी 1797 · सहीह मुस्लिम 1344 · जामे तिर्मिज़ी 950 · सहीह

💡 अमली मशवरे और आम ग़लतियाँ

- हजर-ए-असवद तक पहुँचने के लिए कभी किसी को धक्का या तकलीफ़ न दें — दूर से इशारा करना भी सुन्नत है।
- काबा को बाईं तरफ़ रखें और चक्कर एहतियात से गिनें; शक हो तो कम तादाद मान लें।
- अरफ़ात में निशानात देख लें और ग़ुरूब तक उसकी हुदूद के अंदर रहें।
- सिर्फ़ छोटी कंकरियाँ मारें — बड़े पत्थर, जूते या बोतलें नहीं — और ऐसे मारें कि हौज़ में गिरें।
- अपनी ताक़त बचाएँ: जब मौक़ा मिले सो जाएँ, बार-बार पानी पिएँ, छोटा बैग रखें और आरामदेह चप्पल पहनें।
- सफ़र से पहले उन दुआओं की फ़ेहरिस्त लिख लें जो आप अपने घर वालों और दोस्तों के लिए करना चाहते हैं।
- जहाँ फ़िक़्ही मसालिक में इख़्तिलाफ़ है (हज की क़िस्म, नमाज़ें जमा करना, क़ुर्बानी या ख़्वातीन के मसाइल की तफ़सील), वहाँ अपने ग्रुप के आलिम की रहनुमाई पर अमल करें।

Quran Plus School

क़ुरआन प्लस स्कूल — मुस्तनद मर्द व ख़्वातीन उस्तादों के साथ ऑनलाइन क़ुरआन क्लासेज़, आपके वक़्त के मुताबिक़ 24 घंटे। पहली क्लास मुफ़्त।

quranplusschool.com

WhatsApp: +92 317 0924964 · +971 54 145 9759 (UAE)

इस किताबचे के हर हदीस नंबर को असल किताब से मिलाकर चेक किया गया है; क़ुरआनी मतन मेयारी उस्मानी मुसहफ़ से लिया गया है। अगर कोई ग़लती नज़र आए तो व्हाट्सऐप पर ज़रूर बताएँ।